शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

प्रेम और विचार में शक्ति

विनोबा

मैं एक अलग ही दुनिया का आदमी हूं। मेरी दुनिया निराली है। मेरा दावा है कि मेरे पास प्रेम है। उस प्रेम का अनुभव मैं सतत ले रहा हूं। मेरे पास मत नहीं है, मेरे पास विचार हैं। विचारों का लेन-देन होता है। विचार मुक्त होते हैं। उन्हें चहारदीवारी नहीं होती, वे बंधे हुए नहीं होते। सज्जनों के साथ विचारविमर्श कर उनके विचार ले सकते हैं और अपने विचार उन्हें दे सकते हैं। हम खुद अपने विचार बदल सकते हैं। इस तरह विचारों का विकास होता रहता है। इसका अनुभव मुझे निरंतर आता है। इसलिए मैं कोई वादी नहीं हूं। कोई भी मुझे अपना विचार जंचा दे और कोई भी मेरा विचार जंचा ले। प्रेम और विचार में जो शक्ति है, वह और किसी में नहीं है। किसी संस्था में नहीं, सरकार में नहीं, किसी प्रकार के वाद में नहीं, शास्त्र में नहीं, शस्त्र में नहीं। मेरा मानना है कि शक्ति प्रेम और विचार में ही है। इसलिए पक्के मतों की अपेक्षा मुझसे न करें। विचारों की अपेक्षा रखें। मैं प्रतिक्षण बदलने वाला व्यक्ति हूं। कोई भी मुझ पर आक्रमण कर अपना विचार समझाकर मुझे अपना गुलाम बना सकता है। विचार को समझाये बिना ही कोई कोशिश करेगा तो लाख कोशिश करने पर भी किसी की सत्ता मुझ पर चलेगी नहीं। मैं केवल व्यक्ति हूं। मेरे माथे पर किसी प्रकार का लेबल लगा हुआ नहीं है। मैं किसी संस्था का सदस्य नहीं हूं। राजनैतिक पक्षों का मुझे स्पर्श नहीं है। रचनात्मक संस्थाओं के साथ मेरा प्रेमसंबंध है। मैं ब्राह्मण के नाते जन्मा और शिखा काटकर ब्राह्मण की जड़ ही काट डाली। कोई मुझे हिंदू कहते हैं। पर मैंने सात-सात बार कुरआन-बाइबिल का पारायण किया है। यानी मेरा हिंदुत्व धुल ही गया है। मेरी बातें लोगों को अच्छी लगती हैं, क्योंकि मेरे कार्य की जड़ में करुणा है, प्रेम है और विचार है। विचार के अलावा और अन्य किसी शक्ति का इस्तेमाल न करने की मेरी प्रतिज्ञा है। मेरे पास मत नाम की चीज नहीं है, विचार है। मैं इतने बेभरोसे का आदमी हूं कि आज मैं एक मत व्यक्त करूंगा और कल मुझे दूसरा मत उचित लगा तो उसे व्यक्त करने में हिचकिचाऊंगा नहीं। कल का मैं दूसरा था, आज का दूसरा हूं। मैं प्रतिक्षण भिन्न चिंतन करता हूं। मैं सतत बदलता आया हूं।..मेरा किसी से वाद नहीं। किसी का नाहक विरोध करूं, यह मेरे खून में नहीं है। मैंने लुई पाश्चर की एक तसवीर देखी थी। उसके नीचे एक वाक्य लिखा था - "मैं तुम्हारा धर्म क्या है, यह नहीं जानना चाहता। तुम्हारे खयालात क्या हैं, यह भी नहीं जानना चाहता। सिर्फ यही जानना चाहता हूं कि तुम्हारे दुःख क्या हैं। उन्हें दूर करने में मदद करना चाहता हूं।' ऐसा काम करने वाले इनसान का फर्ज अदा करते हैं। मेरी वैसी ही कोशिश है।

(अहिंसा की तलाश)